मुहर्रम और ताज़ीयादारी

कुरआन हदीस और उल्मा की नज़र में

—: मुरत्तिब :—

महमूद हसन ग़ाज़ी

पेश कर्दा:— बज़्मे पैग़ामे वहदानियत

ए0 ब्लाक, करेली, इलाहाबाद।

मुहर्रम और ताज़ियादारी

बिरादराने इस्लाम। दसवें मुहर्रम के दिन को इसलाम की नज़र में बड़ी अहमियत हासिल है। यही वजह है की रमज़ान के रोज़े फर्ज़ होने से पहले इस दिन का रोज़ा फर्ज़ था और इस की अज़मत व अहमियत तारीख में हुइ इन वाकियात से मज़ीद बढ़ गयी जिन का सुदूर अल्ला के इशारे पर हुआ जिसमें सब से ज़्यादा अहम वाक़ेआ हज़रत मूसा अलै0 का इस दिन फिरऔन ज़ालिम से निजात पाना था। इस दिन अल्लातआला की खुसूसी बरकत को देखते हुए हूज़ूर अकरम सल्लललाहो अलैहे वस्सलम ने फरमाया– मुझे अल्ला से उम्मीद है कि दसवें मुहर्रम का रोज़ा गुज़रे साल के गुनाहों का कफफारह हो जायेगा (मुस्लीम) मज़ीद फरमाया जिस ने अपने घर वालों के खर्च में आशुरा के दिन वुसअत की अल्लातआला साल भर इसे वुसअत अता फरमायेगा (बैहकी) अफसोस की हम मुसलमान इस दिन की बरकतों को हासिल करने के बजाये शैतान के बहकावे में आकर गैर इसलामी कामों में मशगूल हो गये। तहक़ीक़ करने से मालूम हुआ है की सब से पहले 341 हीजरी में इराक़ के हाकिम मुइज़्ज़ुद दौला ने ताज़ीया और मातम को अपने हुकम से शुरु करवाया जबकी हूज़ूर अकरम सल्लललाहो अलैहे वस्सलम का इरशाद है:– वह शख्स हम में से नहीं जिस ने (ग़म की वजह से) गालों पर मारा, गिरेबान फाड़ा और दौरे जिहालत की तरह पुकार लगायी (बुखारी हदीस नं0 1694) नेज़ फरमाया:– मरे हुऐ पर रोना मैययत पर अज़ाब का सबब होता है(अगर मैययत इस अमल से अपनी ज़िन्दगी में राज़ी रहा) (बुखारी हदीस नं0 1676)

अल्ला तआला फरमातें हैं

क्या तुम ऐसी चीज़ को पूजते हो जिसको खुद तराशते हो (अस्साफफात–95)

इसलामी भाइयों– ज़रा ग़ौर करो– काफिर पत्थर को तराश कर पूजा करें तो मुशरिक कहलायें और मुसलमान लकड़ी का ढौंचा बनाकर इबादत करें तो इन की मुसलमा– नियत में कुछ भी फर्क न आये वह बुतों को सजदा करें तो ग़ैर मुसलिम कहलायें और हम ताज़ीया को सजदा करें और करवायें तो हमारी तौहीद परसती में कुछ भी फ़र्क़ न आये। क्या ऐसा मुमकीन है।? इमाम हुसैन रज़ी0 के सर को नेज़ा पर रख कर हज़रत हुसैन रज़ी0 को शहीद करने वालों ने नाचा कुदा था किया हम उनकी नक्ल करते हुऐ गली कुचों और सड़कों पर उछल कुद मचा कर हज़रत हुसैन रज़ी0 की रुह को खुश कर सकते हैं।? ढोल ताशे बजाकर इन की शहादत को याद करना क्या इसलामी तरीक़ा हो सकता है।? ग़ैर इसलामी तरीक़ों को अपना कर क्या हम हज़रत हुसैन रज़ी0 की रुह को तकलीफ नहीं पहुँचा रहे हैं।?

हज़रत अब्दुलक़ादिर जीलानी फरमाते हैं

अगर इमाम हुसैन रज़ी0 की शहादत की वजह से इस दिन को ग़म व अलम का दिन तसव्वुर किया जाये तो पीर का दिन इस से भी ज़्यादा ग़म करने का दिन है क्योंकि रसूल खुदा सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की वफात इसी दिन हुई है और इसी रोज़ हज़रत अबुबकर रज़ी0 ने वफात पायी (गुनीयतुल तालीबैन)।

हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खान साहब फरमाते हैं

अलम ताज़िया, अबरक, मेंहदी, जैसे तरीके जारी करना बिदअत है बिदअत से इसलाम की शान बढ़ती नहीं ताज़िया को हाजत की पूरी करने वाला मानना जिहालत है इस की मन्नत मानना बेवकूफी है और न करने में नुकसान जानना ज़नाना वहम है मुसलमानों को ऐसी हरकत से बचना चाहीये (रिसाला मोर्हरम, ताज़ीयादारी 59)

Scanned with OKEN Scanner

ताज़ियादारी और मुहब्बे अहले बैत

मुहब्बे अहले बैत ईमान की दलील है हुजूर स0 से मोहब्बत का सुबूत है फरमाने खुदावन्दी पर अमल है दिल का सुकून है ज़िहेन का करार है आखिरत का ज़खेरा है जन्नत का वसीला है जहन्नम से हिफाज़त का ज़रीआ है हश्र का तोशा है कब्र का नूर है। मगर इस बात की हरगिज़ इजाज़त नहीं कि इसकी आड़ में और इस मोहब्बत का नाम लेकर हम हुजूर स0 के फरमान की धज्जियाँ उड़ायें, उनके हुक्म को न माने आप स0 की रूह को तकलीफ पहुँचाएं और शैतान के दिल को खुश करें – यह पूरी तरह शैतान का बहकावा और उसकी तालीम है कि अगर तुमने ताज़ियादारी, मातम, और सीना कूबी की तो इसके ज़रिए तुम अहले बैत से मोहब्बत करने वाले और अपने आपको सच्चा आशिक साबित करने वाले होगे।– अगर मोहब्बत व इश्क के सुबूत के लिये यह चीजें कुछ काम की होतीं तो आप बतौंय चारों खलीफा और दूसरे सहाबा किराम से बड़ा आशिक हुजूर स0 का और कौन हो सकता है लेकिन क्या किसी किताब में कहीं आपने पढ़ा कि हुजूर स0 के दुनिया से परदा फरमाने के बाद सहाबा किराम ने अज़ादारी और मातम किया हो?

ताज़ियादारी और सुन्नते इब्राहीमी

बाज़ लोगों का ख्याल है कि जिस तरह हज़रत इब्राहीम अै0 की कुरबानी को यादगार के तौर पर हम मनाते हैं हमें हज़रत हुसैन र0 की कुरबानी को भी मनाने का हक होना चाहिये बेशक हमें उनकी कुरबानी को याद करते हुए ऐसी ही या उससे मिलती जुलती कुरबानी पेश करना चाहिये जैसा कि हज़रत इब्राहिम अै0 की कुरबानी से मिलती जुलती कुरबानी हम अल्लाह के नाम पर अपना जानवर कुरबान करके देते हैं – हज़रत हुसैन र0 ने सुन्नते नबवी यानी हुकूमत चलाने का नबवी तरीका – को ज़िन्दा करने के लिये अपनी जान की कुरबानी दी – हमको भी चाहिये कि उस दिन हम हुजूर स0 की किसी सुन्नत को ज़िन्दा करने के लिये अपनी जान या माल की कुछ कुरबानी दें।

ताज़ियादारी और शआइरुल्लाह

बाज़ हज़रात ने बड़ी जुरअत का सुबूत देते हुए ताज़िया को शआइरुल्लाह में शुमार फरमाया है जिससे अल्लाह,रसूल और बुजुरगाने दीन की याद आवे। अगर शआइरुल्लाह इसी को कहते हैं तो फिर वह शख्स भी हक ब जानिब है जो कहता है कि बुजुरगों के बुत भी शआइरुल्लाह में दाखिल है क्योंकि उनके भी देखने से बुजुरगों की याद आती है और फिल्म के वे सीन भी शआइरुल्लाह में दाखिल हैं जिन्हें देखकर खुदा व रसूल की तरफ ज़िहेन चला जाता है – ज़रा सोचें क्या आपका ज़मीर इस बात को मानने पर तैयार हो सकता है?

ताज़ियादारी और रौज़ा पाक की शबीह

ताज़ियादारी के सिलसिले में बाज़ लोगों के दिल में शैतान ने ख्याल डाला कि जब रौज़े पाक की शबीह बनाना जायज़ है तो उसके आगे सजदा करना मन्नत माँगना भी जायज़ है। ज़रा आप सोचें कि अगर रौजे रसूल स0 की तस्वीर बनाने की उल्मा ने इजाज़त दी है तो आप क्या उस तस्वीर से मन्नत मांगना, सजदा करना, तस्वीर पर चढ़ावा चढ़ाना भी जायज़ समझते हैं? और ऐसा करते हैं? इस अन्दाज़ से अगर हर एक को मसाएल बताने की इजाज़त देदी जाये और मसायल पर कयास करने की गुनजाइश अता कर दी जाय तो फिर वहदौर आजायगा जिसके बारे मे अल्लाह के रसूल स0 ने फरमाया जाहिल लोग फत्वा देंगें खुद भी हलाक होंगें और दूसरों को भी हलाक करेंगें।

Scanned with OKEN Scanner

ताज़ियादारी के किस्से और हिकायतें

कुछ लोग अपनी जिहालत नावाकिफियत और मासूमियत में किस्से, कहानियों और वाकिआत से ऐसा मोतअस्सिर होते हैं कि अपने अकीदा व इमान की बुनयादों को भी बदलने पर आमादा होजाते हैं हालाँकि एक मुसलमान की शान यह है कि अपने आप को अल्लाह की बारगाह में सौंपने के बाद (मुसलमान के माने अपने आपको हवाले करना और सौंपना है) फिर किसी से मोतआस्सर न हो। बल्कि ज़िन्दगी का सफर तै करने के लिये कुरआन व हदीस ही से रोशनी हासिल करें और इस सिलसिले में हमेशा एक बात जिहेन में रखें कि अल्लाह तआला ने हम इनसानों के इम्तिहान की खातिर शैतान व इबलीस को कुछ ऐसी ताकत दे रखी है कि वे जिस शक्ल में चाहें आकर आप से बात कर सकते हैं और मुख्तलीफ चौंकाने वाले वाकिआत के जरिए आपके इमान को मोतअस्सिर कर सकते हैं। इसलिये यह भी मुमकिन है कि ताजिया के तकददुस का प्रोपाण्डा करने के लिये शैतान कुछ ऐसी हरकतें करे जिससे लोग समझें कि यह ताजिये का चमत्कार है – इसलिये प्यारे इस्लामी भाइयों आप से गुज़ारिश है कि हादसात और वाकिआत को कुरआन व हदीस की रौशनी में परखने का मिजाज़ बनाएँ। जो चीज़ कुरआन व हदीस से टकराए आप उसे हरगिज़ न मानें बल्कि उसे शैतान की चाल समझें।

ताज़ियादारी के बारे में मनघड़त बातें और मौज़ू रिवायतें।

शैतान के पुर फरेब जाल और उसकी मक्कारी वाली चाल से बचने के लिये बहुत जरुरी है कि हम यह मिजाज़ बनाएँ कि किसी भी आलिम, मुरशिद और पीर की उसी बात और अमल को मानेंगें जिसकी बुनयाद में कुरआन व हदीस की रौशनी हो और उसी हदीस को मानेंगें जो हवाले के साथ हों अगर हवाला के बजाए सिर्फ हदीस के माने हो या बहुत सी हदीसों से यह साबित है लिखा हो या मशहूर हदीसों से यह बात अयाँ है– लिखा हो तो किसी जानकार आलिम से इतमिनान किये बगैर हरगिज़ आँख बन्द करके उस पर अमल न करें तो इनशाअल्लाह आप हमेशा हक़ वाली राह पर रहेंगें।

ताज़ियादारी में हिन्दुस्तान की खुसूसियत

ताज़ियादारी की मौजूदा शक्ल आपको हिन्दुस्तान और उसके पड़ोसी मुल्कों ही में नज़र आयेगी हालाँकि इस्लामी चीज़ों की एक ही असली शक्ल होती है वह कभी नहीं बदल सकती चाहे खुश्की में हो या तरी में, अरब में हो या हिन्द में, मैदानों में हो या पहाड़ों में– अगर उसके अन्दर तबदीली हुई इस्लामी अक़ीदत व मोहब्बत के मेयार बदल गए कुरबान गाहों की बारगाहें बदल गईं तो समझ लिजिये कि आपके इस्लाम ने अस्लियत खोकर नक़लियत का लिबास पहन लिया है।

मोहर्रम के ढोल और हरे काले कपड़े

इसके पीछे दलील दी जाती है कि इस अमल से ग़मे हुसैन को मानने और उसका माहौल बनाने में मदद मिलती है इसके अलावा यह ग़मे हुसैन को ताज़ा रखने और दिल व दिमाग में बसाने में मददगार होता है। प्यारे इस्लामी भाइयों अगर हमारे अकीदे व ईमान की बुनयाद कुरआन व हदीस पर है तो उसकी रौशनी में ग़म मनाने की ज़रा बराबर गुन्जाइश नहीं– ग़म मनाना अलग चीज़ है और ग़म का आ जाना अलग चीज़ है। ग़म मनाने के सिलसिले में हुज़ूर स0 का इरशाद है सिर्फ औरत को इजाज़त है कि वह अपने शौहर का इनतिक़ाल के बाद 4 महीने 10 दिन ग़म मनाए बाकी किसी को तीन दिन से ज़्यादा ग़म मनाने की इजाजत नहीं है।

Scanned with OKEN Scanner